Dr. Kaushal Kumar
Economics
B. A. I

5. अध्ययन के उद्देश्य	यह वैयक्तिगत आर्थिक इकाई जैसे एक फर्म के अध्ययन में सहायक होता है।	यह रोजगार, आय तथा आर्थिक विकास के अध्ययन में सहायक होता है।
6. सिद्धान्त	व्यष्टि अर्थशास्त्र में माँग का सिद्धान्त, उत्पादन के सिद्धान्त तथा कीमत-निर्धारण का अध्ययन किया जाता है।	समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय, रोजगार के सिद्धान्त तथा सामान्य मूल्य स्तर का अध्ययन किया जाता है।

~~कमी~~

परिसीमाएँ :— इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्थिक विश्लेषण पूर्णतया व्यक्तिगत व्यवहार या आचरण पर आधारित है तथा इसका सम्बन्ध अन्तर वैयक्तिक सम्बन्धों से भी होता है। किन्तु Adam Smith तथा मार्शल जैसे प्रारंभिक अर्थशास्त्रियों ने इस प्रणाली को पुष्ट करने का प्रयास किया गया, फिर भी इसकी निम्नलिखित प्रमुख सीमाएँ निम्न हैं :—

(1) अर्थव्यवस्था की कार्य प्रणाली के सही एवं उचित चित्रण का अभाव (It does not give a correct and proper picture of working of the economy) → सर्व प्रथम तो इससे सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था की कार्य प्रणाली का सही चित्र उपस्थित नहीं होता, क्योंकि व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था की कार्य-प्रणाली की जगह अर्थ-व्यवस्था के केवल कुछ भागों की कार्य प्रणाली पर ही जोर देता है, किन्तु जैसा हमलोग जानते हैं, अर्थ-व्यवस्था के भिन्न-भिन्न भागों द्वारा संचालित नीति के कुछ परिणाम प्रत्येक फर्म तथा उद्योग के कार्यों से भिन्न हो सकता है। इसलिए व्यष्टि अर्थशास्त्र के निष्कर्ष को समूह पर लागू करते समय हमें आवश्यक सतर्कता से काम लेना पड़ता है।

जीवन में पूर्ण रोजगार की कल्पना करना बिल्कुल भ्रमास्पद होगा। कीन्स ने इस सम्बन्ध में ठीक ही कहा है, कि "पूर्ण रोजगार की कल्पना करना कठिनाइयों से पूर्णरूपेण मुख मोड़ना है।" To assume a full employment economy is to assume your difficulties away। इसी प्रकार इसकी दूसरी मान्यता है, कि "अन्य बातें समान रहती हैं" other things remaining the same, किन्तु वास्तविकता यह है कि अन्य बातें कभी भी एक समान नहीं रहतीं।

(3) कुछ आर्थिक समस्याओं :- जैसे रोजगार, आय अथवा मौद्रिक नीति आदि का अध्ययन इसके अन्तर्गत नहीं किया जाता। अतएव यह विश्लेषण अर्थशास्त्र की आधुनिक जटिल समस्याओं के अध्ययन के लिए उपयुक्त नहीं है। वास्तव में, इन समस्याओं का समाधान आर्थिक समष्टिभाव के बगैर ~~[illegible]~~ ~~नहीं~~ किया ही नहीं जा सकता।

(4) विशिष्ट अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन करने के बजाय उसके कतिपय अंशों पर ही ध्यान केन्द्रित करता है। जिसमें यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की सामूहिक क्रियाशीलता पर कोई प्रभाव नहीं डालता।

आर्थिक व्यष्टिभाव अथवा विशिष्ट अर्थशास्त्र की उपरोक्त परिसीमाओं के कारण ही अर्थशास्त्रियों के लिए इसका आकर्षण बहुत कम हो गया है। वास्तव में वर्तमान समय में इसके विरुद्ध कुछ असंतोष पाया जाता है जिसकी शुरुआत तीस की महान आर्थिक ~~[illegible]~~ मन्दी के समय में हुई थी जब कि आर्थिक व्यष्टिभाव पूँजीवादी जगत में गिरती एवं बढ़ती हुई बेरोजगारी की भीषण समस्याओं के समाधान में पूर्णतः असमर्थ पाया गया है।

किन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि आर्थिक समष्टिभाव के लिए आर्थिक व्यष्टिभाव सम्बन्धी निष्कर्ष का कुछ भी महत्व नहीं है। वास्तविकता में यह है कि आर्थिक व्यष्टिभाव का अध्ययन समष्टिगत समस्याओं पर प्रकाश डालता है।